भूमिका

आंदोलन किसी भी लोकतान्त्रिक समाज की नींव होते हैं। खासकर जब एक समतामूलक समाज की कल्पना की जाती है तो उसमें आंदोलनों की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत जैसे वैविध्यपूर्ण समाज में तो आंदोलनों के माध्यम से ही कई समाजों ने अपने अधिकार हासिल किए है। खासकर जब हम मणिपुर की बात करते हैं उसमें महिला आंदोलनों की एक खास पृष्ठभूमि मणिपुर समाज के इतिहास में दर्ज है। आज जब हम दावा करते हैं कि रूढ़िवादी इतिहासकारों ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाली महिला वीरांगनाओं को अनदेखा कर उनके सहयोग और संघर्ष को इतिहास में स्थान नहीं दिया तो फिर मणिपुर में महिला आंदोलनों को थोड़ा गंभीरता से समझने व जानने की अत्यंत आवश्यकता है इस प्रक्रिया के तहत ही मैंने शोध के लिए यह विषय चुना है। जो आज भी समाज में नई पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक व शिक्षाप्रद है परंतु जिसकी जानकारी शेष भारत को न के बराबर ही है।

'आज राजनीतिक और प्रशासनिक कमजोरियों के चलते विकास के लाभ लोगों तक पहुँचने में बहुत देरी व सुस्ती ने हिंसा के संकट को और गहरा दिया है' मणिपुर के सामने मौजूद अलगाववाद, उग्रवाद और नक्सलवाद की चुनौती, समुदाय, धर्म, भाषा तथा वर्ग की पहचान की राजनीति में हिंसा ही इसका नतीजा है। अब यह बेहद ज़रूरी है कि हमारी संवैधानिक विचारधारा और लोकतान्त्रिक मूल्यों के लिए चुनौती बन रहे अलगाववाद, उग्रवाद और नक्सलवाद के खिलाफ सभी दलों में व्यापक सहमति बने। तभी हम धर्म, भाषा और जाति की पहचान को सहेजने के साथ ही समानता के मूल्यों पर बनी लोकतान्त्रिक विचारधारा की छतरी को भी बरकरार रख सकेंगे।

'वरिष्ठ मार्क्सवादी आलोचक मैनेजर पाण्डेय कहते हैं भारत में लोकतन्त्र का सच और भारतीय लोकतन्त्र में समानता, स्वतन्त्रता और भाईचारा का यथार्थ रूप पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों से पूछे। इन राज्यों के नागरिकों को कैसी स्वतन्त्रता मिली हुई है और उसका कितना दमन होता है इसकी वास्तविकता पूर्वोत्तर राज्यों में ही देखने को मिलेगा। अपने जंगल, ज़मीन और जीवन के लिए संघर्ष करने वाले लोगों से लोकतन्त्र का सच जानिए।'

मेरा इस विषय पर शोध करने का उद्देश्य मणिपुर की महिलाओं का संघर्ष और मणिपुर समाज के प्रति सरकार की उदासीनता और रवैया को दिखाने का प्रयास है। एक लोकतान्त्रिक समाज में किस प्रकार से अधिकारों का हनन किया जा रहा है और इन अधिकारों को प्राप्त करने की लड़ाई मणिपुर की

महिलाओं द्वारा दशकों से विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से लड़ी जा रही है। मणिपुर में जो संघर्ष चल रहा है वह आत्मसम्मान और पहचान के लिए संघर्ष है न सिर्फ गरीबी और विकास के लिए। स्थानीय प्रशासन की नाकामियों ने समस्या को और विकराल कर दिया है। मणिपुर में हिंसा की समस्या से निपटने के लिए हमें समस्या के हर पहलुओं पर विचार करना होगा। इस विचार के तहत ही मैंने अपने शोध कार्य के द्वारा मणिपुर में महिला आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर आंदोलनों की सामाजिक एवं वैचारिक विचारधारा को जानने का प्रयास किया है। समाज में संबन्धित समस्याओं व मुद्दों पर भी विचार किया गया है। साथ ही विभिन्न आंदोलनों के प्रति सरकार के उदासीन रवैये के बावजूद महिलाओं का अपने अधिकारों को लेकर जागरूकता व आत्मनिर्भरता की भावना को अच्छे से इस शोध कार्य के द्वारा देखा जा सकता है। इस शोध कार्य के तहत मैंने तीन अध्यायों का विभाजन किया है।

पहला अध्याय मणिपुर के इतिहास में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन है। जिसके तहत मैंने तीन चरणों

1) सामाजिक स्थिति

2) आर्थिक स्थिति

3) राजनीतिक स्थिति

के अंतर्गत महिलाओं की स्थिति को दिखाने का प्रयास किया है। मणिपुर एक पितृसत्तात्मक राज्य है। परंतु समाज में मातृवंशात्मक शासन देखने को बखूबी मिलता है। इस अध्याय के तहत सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों में महिलाओं की भागीदारी समाज में किस प्रकार से रही है ये दिखाया है। मणिपुर में महिलाएँ काफी मजबूत है। कई दशकों से लगातार हो रहे संघर्ष और मौत की घटनाओं के बीच भी काफी सकारात्मक रुख अपनाया है। उन्होने अहिंसात्मक आंदोलन चलाए हैं लेकिन सरकार जो भी बातचीत की प्रक्रिया शुरू करती है उसमें महिलाओं को भागीदार नहीं बनाया जाता। आज वर्तमान में 17 शांति वार्ताएं चल रही है लेकिन किसी भी वार्ता में कोई भी महिला या उनसे जुड़े संगठनों की भागीदारी नहीं है। मणिपुर में बिना महिलाओं को भागीदार बनाए कोई भी शांति प्रक्रिया नहीं चलाई जा सकती। महिला संगठनों ने कई बार इस मुद्दे को उठाया है लेकिन केंन्द्र या राज्य सरकार इस बात पर ध्यान नहीं देती।

जिस समाज की महिलाओं ने मणिपुर की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक इतिहास में हमेशा से मुख्य भूमिका निभाई है। उनकी अहम भागीदारी होने के बावजूद राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं का वर्चस्व कभी क्यों नहीं रहा ये सोचने वाली बात है। इस बात की जांच पड़ताल इस अध्याय के माध्यम से करने का प्रयास किया है।

दूसरा अध्याय इस अध्याय में मणिपुर के विभिन्न संगठनों व आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दिखाने का प्रयास किया है। महिलाओं की अपनी अधिकारों को प्राप्त करने के पीछे इन आंदोलनों और संगठनों की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका रही है इस अध्याय के माध्यम से देख सकते हैं। वर्तमान समाज में कुछ सक्रिय संगठनों एवं आंदोलनों का विस्तारपूर्वक विवरण उनके कार्य प्रणाली के साथ किया है ताकि पाठकों को महिलाओं के जीवन में आंदोलनों व संगठनों की आवश्यकता को एक लोकतान्त्रिक समाज के भीतर समझने में कठिनाई न हो। मणिपुर समाज आज जिन हिंसा, अत्याचारों और अधिकारों से त्रस्त है उसे भारत के हर नागरिकों को समझने व सहयोग देने की ज़रूरत है।

तीसरा अध्याय इस अध्याय के अंतर्गत मैंने मणिपुर समाज में महिला आंदोलनों की प्रासंगिकता व समाज की समस्याओं व मुद्दे की बात उठाई है। आज मणिपुर जिन समस्याओं से गुज़र रहा है चाहे वो आंतरिक संघर्ष हो या आतंकवाद या आफ़स्पा। इस पर सरकार को जल्द से जल्द विचार किया जाना चाहिए। वरना बहुत कम सालों में मणिपुर विधवाओं का राज्य या लाशों के ढेर में परिवर्तित हो जाएगा। सरकार इस राज्य की समस्याओं पर थोड़ा ध्यान दे तो यह समाज बच सकता है वरना आज जिन हालातों में मणिपुर समाज है बहुत जल्द ही उन हालातों के पार मात्र एक ऐसा समाज बचेगा जहाँ की जनता अपने ही नागरिकों के अधीन गुलामी में सांस लेते नज़र आएंगे। जहाँ लोकतन्त्र के अपवाद के रूप में मणिपुर राज्य को जाना जाएगा।

शोध प्रश्न-

1) मणिपुर की महिला आंदोलनों की अपनी क्या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही है और आज के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता किस प्रकार से है?

2) महिला आंदोलनों के समक्ष क्या-क्या चुनौतियाँ रही

3) महिला संगठन समाज व जन मानस को किस प्रकार से प्रभावित कर रहे हैं?

मेरे शोध का उद्देश्य –

1) मणिपुर में महिला संगठनों,महिला आंदोलनों एवं उसके विकास के बारे में गहराई से जानना साथ ही साथ वर्तमान समाज में उसकी प्रासंगिकता को भी समझना ।

2) सामाजिक व्यवस्था में महिला संगठनों की भूमिका का विश्लेषण करना एवं उसका जन मानस पर प्रभाव को इंगित करना।

3) मणिपुर में सक्रिय महिला संगठनों एवं अन्य महिला आंदोलनों के बीच के सम्बन्धों को जानना।

4) मणिपुर की महिलाओं का संघर्ष एवं महिला सशक्तिकरण के स्वरूपों का अध्ययन

शोध प्रविधि-

इस शोध के दौरान मैंने प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्त्रोतों का उपयोग किया है। प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत लोगों से मिली जानकारी, व्यक्तियों से बातचीत, चर्चाएँ, गैर सहभागी अवलोकन और क्षेत्र सर्वेक्षण शामिल है। सबसे पहले डाटा इकट्ठा किया फिर उसका विश्लेषण किया। विभिन्न महिलाओं की संगठनों की गतिविधियों के अध्ययन के बाद उनको अपने शोध में शामिल किया। इसके साथ ही उन क्षेत्रों का भी दौरा किया है जहाँ दबाव समूह संगठन काम करती हैं। उनसे बातचीत और उनके कार्यों का अवलोकन करके मैंने अपनी जानकारी एकत्रित किया है।

द्वितीयक स्त्रोतों के अंतर्गत हेंडबुक,विभिन्न पत्रिकाओं,समाचार पत्रों,वेबसाइटों,उपलब्ध साहित्य सांख्यिकीय इत्यादि।

व्याख्यात्मक या कारणात्मक अनुसंधान:- इस अनुसंधान के तहत घटनाओं के कारणों की व्याख्या की जाती है। मणिपुर में बढ़ती हिंसा, आतंकवाद व सामाजिक समस्याओं के कारणों को इसके तहत खोजने का प्रयास किया। समाज में महिलाओं द्वारा आंदोलनों के पीछे की विचारधाराओं की इसके तहत पड़ताल की है।

नारीवादी दृष्टिकोण:- नारीवादी दृष्टिकोण से तात्पर्य यह है कि मैंने अपने शोध में मणिपुर के पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को ही मुख्यधारा में रखकर समाज में उसकी स्थिति को इंगित करने का

प्रयास किया है। जहाँ महिलाएँ समान अधिकार, समता मूलक अधिकार और लैंगिक समानता की बात करती है।

सर्वेक्षण पद्धति:- सर्वेक्षण पद्धति में किसी विशेष समुदाय 'समूह' संगठन इत्यादि का व्यवस्थित और विस्तृत अध्ययन किसी सामाजिक समस्या के विश्लेषण की दृष्टि से तथा उसके समाधान को प्रस्तुत करने की दृष्टि से किया जाता है जैसे अपराध में वृद्धि, राजनैतिक भ्रष्टाचार, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा इत्यादि। अतः मैंने इस पद्धति के आधार पर मणिपुर की विशेष समुदाय जैसे मेते समुदाय, कुकी समुदाय, नागा समुदायों के अध्ययन के साथ मणिपुर में सक्रिय विभिन्न संगठननों की व्यवस्थित और विस्तृत अध्ययन सामाजिक समस्या के विश्लेषण की दृष्टि से उसके समाधान को प्रस्तुत करने की दृष्टि से किया है।

ऐतिहासिक पद्धति:- इस पद्धति के तहत मैंने मणिपुर की महिला संबंधी आंदोलनों के इतिहास को क्रमबद्ध समय के साथ उनके अतीत के विषय में सभी प्रकार के लिखित अभिलेखों, समाचार पत्रों, दस्तावेजों, लोगों से मिली जानकारियाँ इत्यादि के आधार पर एकत्रित जानकारी को अपनी शोध कार्य में प्रयोग किया।

गुणात्मक पद्धति:- गुणात्मक अनुसंधान से अभिप्राय उस अनुसंधान से है जिसका उद्देश्य किसी सामाजिक घटना के गुणों तथा विशेषताओं को उजागर करना होता है। इस पद्धति के माध्यम से मैंने मणिपुर में सक्रिय आंदोलनों के सदस्यों, इमा मार्केट की महिलाओं, मणिपुर यूनिवर्सिटी में कार्यरत प्रोफेसरों व एक्टिविस्ट धनबीर लाइश्राम से समकालीन मणिपुर समाज की समस्याओं के बारे में चर्चा की। जिसके तहत मैंने समस्या के मूल कारणों को समझने का प्रयास किया और उन समस्याओं संबन्धित कारणों व समाधान को मैंने अपनी इस शोध कार्य के द्वारा खोजने की प्रयास की।

गुणात्मक पद्धति के आधार पर मैंने इन विधियों का प्रयोग किया:

1) साक्षात्कार:- मैंने मुख्यत: धनबीर लाइश्राम से साक्षात्कार के माध्यम से आंदोलनों पर चर्चा की जिसके तहत उन्होने आंदोलनों पर राजनीतिक दलों की दखल के परिणाम पर कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी।

2) गैर सहभागी अवलोकन:- स्थिति से अलग रहकर ही मैंने अपने शोध कार्य को मात्र गैर सहभागी अवलोकन के तहत पूरा किया है।

शोध क्षेत्र- शोध क्षेत्र में मैंने मणिपुर में इम्फाल शहर को लिया है। इम्फाल में मैंने इमा मार्केट, मणिपुर यूनिवर्सिटी, माइरा पाईबी के सदस्यों, संगठनों के सदस्यों से आंदोलनों एवं समाज की समस्याओं पर चर्चा की। इमा मार्केट को को लेने का उद्देश्य ये रहा कि मणिपुर में महिला आंदोलनों की नींव इमा मार्केट से ही पड़ी। मणिपुर यूनिवर्सिटी को लेने की वजह यह रही है कि शैक्षिक संस्थानों में आंदोलनों को लेकर किस तरह का माहौल बनता है इसकी वास्तविकता प्राप्त करने के लिए।

साहित्य पुनरावलोकन:-

जब भी हम इतिहास की बात करते हैं तो हमारे सामने राजा-महाराजाओं, बादशाहों के अपना साम्राज्य फैलाने के लिए आपसी मार-पीट के दृश्य सामने आते हैं या फिर ब्रिटिशकाल के इतिहास को याद करेंगे तो हमारी पाठ्य-पुस्तकों में हमें 1857 का विद्रोह पढ़ाया जाता है जिसमें कही थोड़ी सी जगह रानी लक्ष्मीबाई के लिए छोड़ दी गई होगी, उसके बाद हमें तिलक युग, महात्मा गाँधी युग, भगत सिंह का समय, सुभाषचन्द्र बोस के बारे में इतिहास पढ़ाया जाता है, हमें इसी तरह पढ़ाया जाता है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद से आज़ादी इन महापुरुषों के कारण मिली। कुछेक नारियों के बारे में थोड़ा-बहुत पढ़ाया जाता है जैसे-एनीबेसेंट, सरोजिनी नायडू, भीकाजी कामा जिन पर कभी-कभार टिप्पणी जैसे प्रश्न पूछे जाते हैं इसलिए पढ़ाया भी उतना ही जाता है जितना एक टिप्पणी के लिए ज़रूरी होता है।

हमारे मानव समाज के इतिहास में हमेशा जन-इतिहास को उपेक्षित किया गया है इसी जन-इतिहास में नारी इतिहास भी शामिल है जिसे सामंतवादी, बुर्जुआ इतिहासकारों ने अपने लेखन में जगह नहीं दी। इतिहास के पन्नों से नारियों का जिक्र तक अदृश्य कर दिया गया, जिन गिनी-चुनी नारियों का जिक्र इतिहास में किया जाता है वे इतनी सशक्त थी कि उन्हें इतिहास के पन्नों से हटाना मुश्किल था इसलिए उन्हें इतिहास में थोड़ी-बहुत जगह मिली, पर उस तरह नहीं जिस तरह पुरुष महापुरुषों को मिली है उन्हें महिमामंडित किया जाता है। जब से दुनिया में नारीवादी आंदोलन उभरे उन्होने उपेक्षित इतिहास को फिर से लिखना शुरू किया। **"री-राइटिंग हिस्ट्री"** के तहत बहुत स्त्री महिलाओं ने अदृश्य औरतों को इतिहास के पन्नों पर लाने का काम किया।

मेरा शोध कार्य मणिपुर में हुए महिला आंदोलनों के व्याख्यात्मक इतिहास को आपके सामने प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। मणिपुर में महिला आंदोलनों की अपनी एक अलग इतिहास सदियों से रही है। मणिपुर में औरतें पिछले तीस सालों से **"नैतिकता के लिए लड़ाई"** करती आई है ये मूल्यों के

लिए लड़ी गई लड़ाई होती थी।सामाजिक आंदोलन उस वक़्त देखे तो पाएँगे कि जहाँ पर मातृसत्ता प्रशासन था वहाँ पर कुछ महारानियों ने राज्य किया। जिन राज्यों में राजाओं का राज्य था वहाँ कई बार ऐसा हुआ जब राजा ने प्रशासन के कार्यों के लिये महारानियों से सलाह मशविरा किया है। बहुत बार यदि प्रशासन कोई गलती या अन्याय करता तो महिलाओं कासमूह इकट्ठा हो कर उसे सुधारने की माँग करता। मणिपुर की महिलाएँ सैकड़ों सालों से मणिपुरकी अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती आ रही है।

मणिपुर में **महिलाओं** की आंदोलन करने की एक लम्बी परम्परा रही है। ये आंदोलन सामाजिक सुधार और प्रशासकीय अत्याचार के विरोध में किए जाते थे। प्राचीनकाल से ही मणिपुर के लोग दो तरह से सत्ता-व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन करते आये हैं। पहला अहिंसक और शांतिप्रिय तरीके से आंदोलन करना अपनी शान-आन-बान के खिलाफ समझते थे इस कारण यदि कोई राजा या अधिकारी गलत निर्णय लेता था या अन्याय करता था तो पुरुष सबसे पहले अपनी महिलाओं को सत्याग्रह करने के लिये राजा के महल में भेज देते थे। औरतें विरोध प्रदर्शन करके न्याय प्राप्त कर लेती थी या गलती का सुधार हो जाता था।

मैंने यहाँ अपने शोध कार्य से संबन्धित कुछ पुस्तकों का साहित्य पुनरावलोकन किया है। जो कुछ इस प्रकार है:-

कारात,बृंदा.*जीना है तो लड़ना होगा (2008)* सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली. बृंदा कारात, जुझारू महिला आंदोलन का लंबे समय से नेतृत्व करनेवाली विशिष्ट नेत्री है। "जीना है तो लड़ना होगा" पुस्तक समूची नारी जाति की दशा में सुधार लाने और उनकी बेहतरी के लिए स्त्री-पुरुष के बीच मौजूद तमाम भेदभाव और असमानता को मिटाने के लिए, जनतंत्र की रक्षा के लिए, समान अधिकारों और नारी-मुक्ति के लिए और शोषण-मुक्त समाज की स्थापना के लिए भारत के शहरों और गावों की महिलाओं को व्यापक रूप से संगठित करने और एक मजबूत और व्यापक आधार वाला महिला आंदोलन चलाने की ज़रूरत को प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक नारीवाद और महिला आंदोलन को दो अलग-अलग वस्तुएँ मानती है। नारीवाद एक विचारधारा है जिसके आधार पर महिलाओं की मुक्ति के प्रयास किए जाते हैं तदनुसार महिला मुक्ति के आंदोलन चलाने के प्रयास किए जाते रहे हैं इससे यह भी स्पष्ट है कि 'महिला मुक्ति आंदोलन' जैसी कोई एक चीज़ नहीं है बल्कि इसके अनेक प्रकार हैं जिन्हे महिलाओं के अलग-अलग संगठनों द्वारा किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों में देखा जा सकता है। यह पुस्तक समाज में अपने अधिकारों के लिए महिलाओं की आवाज़ का तेज़ से तेज़ होने की उम्मीद को

बनाए रखने का एक अनोखी प्रयास है। **शर्मा,क्षमा.*औरतें और आवाज़ें (2005)* आलेख प्रकाशन, दिल्ली,2005.**'औरतें और आवाज़ें' सधे हुए अंदाज़ में लिखे गए लेखों का संग्रह है। इस पुस्तक के माध्यम से हम इस बात से परिचित हो सकते हैं कि आज का स्त्री-विमर्श कहाँ से कहाँ तक पहुँचा है। एक लेख में लेखिका मर्दवादी विमर्श की चर्चा करते हुए लिखती है **'लोग चाहते हैं कि औरतें कमाकर लाएँ लेकिन रहें वे हुक्म की गुलाम रहे । क्या यह संभव है?नाथे हुए बछड़े की जब भी रस्सी खोल दी जाती है तो वह मालिक कोछोड़कर कुलाँचे भरता दूर चला जाता है'।**

स्त्री को प्रतिरोध की शक्ति शिक्षा और आत्मनिर्भरता के विचार ने दी है। उसे यह सोच भी दिया है कि स्त्री के जीवन के लिए आत्मनिर्भरता ज़रूरी है न कि विवाह। और देखिए कल की खलनायिका, देहरी से बाहर पाँव रखनेवाली औरत, पढ़ी-लिखी, गिटपिट करती आज नायिका बन गई है। स्त्रीवादी विचार सहज-स्वीकार्य हो चला है और उसने पुरुष वर्चस्व की धज्जियाँ उड़ा दी है। क्षमा शर्मा अपनी पुस्तक में कहती है कि स्त्रियों की आज़ादी से वे लोग बहुत डरते हैं जो अब तक उन्हें दबाकर रखते आए हैं इसीलिए कभी डेंगू के नाम पर लड़कियों के स्कर्ट पहनने पर रोक की बात की जाती है, कभी उसे नये सिरे से बुर्के में धकेलने की बात की जाती है लेकिन खुशी की बात यह है कि स्त्री समर्थक वामपंथी आंदोलन ऐसी ताकतों को चुनोती देने में न केवल सक्षम है बल्कि इन ताकतों से दो-दो हाथ करने के लिए भी मौजूद है। क्षमा शर्मा के जीवंत लेखों का यह पुस्तक संग्रह कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इनके विषय-संदर्भों विविधता और व्यापकता पाठक की उत्सुकता को जगाती है क्योंकि सबके केंद्र में निर्विवाद रूप से औरत है।

रावत,ज्ञानेन्द्र (2006) *औरत अस्मिता और यथार्थ* कांती बुक सेंटर, दिल्ली. 'औरत अस्मिता और यथार्थ' पुस्तक जिसमे विभिन्न उम्र-वर्ग और क्षेत्रों के लेखकों के चुनिन्दा लेखकों के संकलन का जिक्र हुआ है। इस तरह की पुस्तकें औरतों को तो वैचारिक क्रान्ति की चिंगारी देती ही है उन आदमियों के लिए भी आईना साबित होती है जिन्हें यह एहसास ही नहीं कि वे उनके अधिकारों को कुचलते हुए चौड़े हो रहे हैं। ज्ञानेन्द्र रावत ने 'अपनी बात'में चर्चा की है कि 'उसे अपने जीवन के अहम फैसलों का अधिकार भी नहीं'। रावत के अनुसार "वह अमानवीय प्रताड़ना व अपराधों की शिकार है"। असलियत में औरत के साथ आज भी जानवरों से बदतर बर्ताव हो रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक महिलाओं के विरुद्ध अपराध, अत्याचार और उसकी त्रासदी के संबंध में जन चेतना जागृत करने की दिशा में एक कदम है। यह प्रख्यात समाज विज्ञानियों, चिंतकों, पत्रकारों व

महिला उत्थान हेतु संघर्षशील प्रबुद्ध महिलाओं के लेखों का संकलन है इसके माध्यम से देश के जन-मानस को महिलाओं की त्रासदी की समग्र जानकारी हो सके। जहाँ तक महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में कमी का सवाल है तो उसके लिए महिलाएं यदि शक्ति के स्वरूप को अपने जीवन में आत्मसात कर ले तो उनके विरुद्ध होने वाले अपराध कम हो जाएंगे। महिलाओं को समाज और कानून के संरक्षण की ज़रूरत है लेकिन अपनी अस्मिता अधिकारों और स्वाभिमान की रक्षा के लिए उन्हें खुद ही कमर कसनी होगी।

इसमे कोई दो राय नहीं कि औरत की बदहाली के लिए यदि कोई जिम्मेदार है तो वह है हमारा समाज और समाज की वह विकृत मानसिकता जिसके तहत वह औरत को मात्र दासी और भोग्य समझता रहा है। विडम्बना यह है कि आज भी उसकी सोच में कोई बदलाव नहीं आया है। इसमें हिन्दू धर्म-संस्कृति के नीति नियंता मनु और समाज में उनके प्रतिनिधि के रूप में फैले धर्म के ठेकेदार तथा इस्लाम के सबसे बड़े अलंबरदार के रूप में खुद को बताने वालों की अहम भूमिका रही है। इसे झुठलाया नहीं जा सकता। यही लोग हर समय रूढ़ियों-परम्पराओं के नाम पर व निजी स्वार्थों की खातिर औरत की बदहाली को बरकरार रखने की कोशिश में जी-जान से लगे रहते हैं। इसी का नतीजा है कि दो महिला दशक मना लेने और शिक्षण-प्रशिक्षण व रोजगार के अवसर जुटाये जाने, राजनीतिक,प्रशासनिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में उसको भरसक हिस्सेदारी दिए जाने के हरसंभव प्रयासों के बाद भी देश में उसकी स्थिति संतोषप्रद नहीं कही जा सकता।

यह ठीक है कि अब वह अबला नहीं है और करवट लेकर जाग चुकी है लेकिन फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में वह आज भी बहुत पिछड़ी है और हर क्षेत्र में शोषण की शिकार है। स्त्री आंदोलन भी इस दिशा में कोई प्रभावी भूमिका निबाह पाने में नाकाम रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक में वरिष्ठ पत्रकार-लेखक ज्ञानेन्द्र रावत ने देश के जाने-माने चिंतकों, लेखकों साहित्यकारों, पत्रकारों,महिला विषयक मामलों के विशेषज्ञों के लेखों के माध्यम से इन्हीं तथ्यों को उजागर करने का काम किया है। यह पुस्तक समाज में भारतीय महिलाओं की सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति, इनका शोषण-उत्पीड़न तथा स्वतंत्रता के लिए मुक्ति आंदोलन के उत्तरोतर विकास की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को उजागर करने में प्रमुख भूमिका का निर्वहन करती है।

घोष, जी. के, घोष शुक्ला.*वीमेन ऑफ मणिपुर (1997)* नटराज बुक्स,नई दिल्ली. जी.के घोष, शुक्ला घोष की पुस्तक **"वीमेन ऑफ मणिपुर"** मणिपुर के महिला आंदोलन का इतिहास बयान करता दस्तावेज है। "महिला आंदोलन" नाम से एक तस्वीर जेहन में उभरती है, संघर्ष

करती, विरोध करती, धरने देती, जेल जाती औरतें और आंदोलन एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पुस्तक में मणिपुर में महिलाओं की स्थिति को लेकर किए गये संघर्षों का सिलसिलेवार विवरण है। ये विवरण महज सूचनाएँ बनकर नहीं रह गए हैं वरन इनमें विचारों, संकल्पनाओं,आशंकाओं और तर्कों को संदर्भों से जोड़कर संघर्ष का हिस्सा बनाया गया है। महिला शक्ति की सार्वजनिक अभिव्यक्ति को समाज के मध्य तलाशा गया है। लेखक का निष्कर्ष है कि तमाम जद्दोजह्द के बावजूद हिंसा-मुक्त एवं सम्मान, समता और सहभागिता पर आधारित समाज आज भी एक सपना है ऐसे में संघर्ष का संकल्प करना ही होगा इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है। **नरैन करना, महेंद्र.*सोशियल मूवमेंट इन नोर्थ- ईस्ट* (1998)नई दिल्ली. "सोशियल मूवमेंट इन नोर्थ-ईस्ट"** पुस्तक में महेंद्र नरैन करना ये कह्ते है कि मणिपुर में किसी भी आंदोलन कि लड़ाई सिर्फ पुरुषों की हिस्सेदारी से फतह नहीं की गई बल्कि महिलाओं की भूमिका भी उल्लेखनीय है। यह बात सिर्फ कहने भर के लिए नहीं है और न नाम गिनाने के लिये।हिंदुस्तान में नवजागरण काल (18वीं से 19वीं सदी) ने भी कई सुधारवादी आंदोलन देखे जो सती प्रथा की समाप्ति, विधवा विवाह, बाल विवाह पर रोक और स्त्री-शिक्षा से सम्बन्धित थे। राजाराम मोहनराय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे महापुरुषों की भूमिका से तो हम सब परिचित है लेकिन उस काल में बंगाल में ज्योतिर्मयी देवी, महाराष्ट्र में ताराबाईशिंदे और सावित्रिबाई फुले ने स्त्रियों की बराबरी और शिक्षा के हक़ के लिए जो आवाज़ बुलंद की उसकी महत्ता अभी रेखांकित होनी बाकी है। यदि इंग्लैंड में 1792ई. में मेरी वुल्सटन्क्राफ्ट ने विंडीकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वीमेन लिखा तो भारत में भी ताराबाईशिंदे ने स्त्री-पुरुष तुलना लिखी। आज़ादी की लड़ाई के दौरान एक बार पुन: महिलाओं को रैलियों, धरना प्रदर्शनों ने घर से बाहर निकलने का मौका दिया। भारत कोकिला सरोजनी नायडू और दुर्गा भाभी जैसे महान नेतृत्व में महिला आंदोलन कई कदम आगे बड़ा।

त्रिपाठी, कुसुम.*औरत इतिहास रचा है तुमने (2010)*कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली. "औरत इतिहास रचा है तुमने" स्त्री-आंदोलन की विशेषज्ञ कुसुम त्रिपाठी की यह पुस्तक स्त्री-आंदोलन के इतिहास की दिशा में एक सार्थक कदम है। इस इतिहास का आधार राजघरानों की राजसी नेत्रियाँ नहीं,जन-सामान्य की संघर्षशील किंतु अचर्चित स्त्रियों की आंदोलन-गाथा है। इतिहास लेखन में हुई गम्भीर भूल को दूर करते हुए लेखिका ने 1857 की पूर्व पीठिका, ब्रिटिशों के विरुद्ध आदिवासी, चुआर, बस्तर, कोल, संथाल, बिरसा, मनयान विद्रोह पर गम्भीरता से विचार किया। **त्रिपाठी, कुसुम. *स्त्री संघर्ष के सौ वर्ष (2013)* भावना प्रकाशन, दिल्ली. " स्त्री संघर्ष के सौ वर्ष"** पुस्तक में कुसुम त्रिपाठी ने

पितृसत्ता की उत्पत्ति और विकास, इतिहास में घटित ऐतिहासिक महिला आंदोलन के संघर्षों,जनांदोलनों में स्त्रियों की भूमिका, क्रांतिकारी समाजवादी आंदोलनों में स्त्रियों का नेतृत्व, पूंजीवादी देशों में स्त्रियों की स्थिति,नव-स्वतंत्र देशों में स्त्रियों की स्थिति तथा भूमंडलीकरण में स्त्रियों का "वस्तुकरण" बनाये जाने की स्थिति का वर्णन किया है। **कुमार, राधा.*स्त्री संघर्ष का इतिहास (2009)* वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली." स्त्री संघर्ष का इतिहास"** पुस्तक के द्वारा राधा कुमार ने भारत में सन् 1800-1990 के दौरान महिला अधिकारों के लिए किये गये आंदोलनों एवं नारीवाद का सचित्र दस्तावेज प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पुस्तक भारत में स्वाधीनता-पूर्व एवं स्वातंत्र्येतर महिला आंदोलन का लयात्मक इतिहास है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार महिलाओं के मुद्दे शुरु-शुरु में समाज सुधार आंदोलन के अंतर्गत पुरुषों द्वारा उठाए गए और आगे चलकर राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल स्त्रियों द्वारा स्वयं उठाए जाने लगे। प्रस्तुत पुस्तक ने भारतीय स्त्रियों के विभिन्न रूपों एवं गहराइयों से पाठकों का परिचय कराने का अद्भुत कार्य किया है।

गुप्ता, रमणिका.*स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने (2008)* शिल्पाय, नई दिल्ली." **स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने**" पुस्तक में रमणिका गुप्ता ने देश में प्रचलित धार्मिक कुरीतियों, विकृतियों, अंधविश्वासों के कारण नारी मुक्ति आंदोलन केवल शहरों में उच्च-वर्ग की स्त्रियों तक किस प्रकार सीमित रह गया है और ग्रामीण क्षेत्रों में वह लगभग शून्य ही रह गया है इस स्थिति को लेखक ने बखूबी हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इन पचास वर्षों में शहरों तथा कुछ हद तक ग्रामीण इलाकों में भी स्त्रियाँ जागरूक हुई है दरअसल स्त्रियों में जागरुकता आज़ादी की लड़ाई के दौरान भी एक सार्थक और सोद्देश्य रूप में उजागर हुई थी भले ही कुछ हद तक हुई हो। प्राय: औरत दोहरे-तिहरे शोषण की शिकार होती है। औरत होने के नाते तथा दलित औरतें होने के नाते भी शोषित होती रहती है। प्रस्तुत पुस्तक यही संदेश देता है कि औरतों को अपनी मुक्ति की लड़ाई खुद ही लड़नी होगी बाहर से कोई उनका मददगार नहीं हो सकता। **महरोत्रा, दीप्ति प्रिया.*इरोम शर्मिला और मणिपुरी जनता की साहस-यात्रा(2009)* दानिश बुक्स, दिल्ली.** दीप्ति प्रिया मेहरोत्रा की पुस्तक**"इरोम शर्मिला और मणिपुरी जनता की साहस-यात्रा**" एक जीती-जागती विचित्र सत्याग्रही का खाका हमारे सामने प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक का मकसद मणिपुर के अहिंसक आंदोलनकारियों की आवाज़ जनता तक पहुँचाना है। क्या उनका संघर्ष सही अंजाम तक पहुँचेगा इस सवाल का जवाब हम सब खोज रहे हैं। आखिर हिंसा व बेइंसाफी से मोड़कर संसार को शांति व इंसाफ के पथ पर ले आना कोई आसान काम तो नहीं है। इरोम

शर्मिला का जीवन दूर-दूर तक संदेश पहुँचाता है कि आज भी संघर्ष जारी है। इंसान व इंसानियत, हिम्मत व साहस अभी लुप्त नहीं हुए है। **जैतली, ममता. शर्मा, श्रीप्रकाश. (2006)** ***आधी आबादी का संघर्ष*****राजकमल प्रकाशन प्रा.लि, नई दिल्ली. " आधी आबादी: संदर्भ एवं प्रसंग"** डॉ.श्रद्धा सिंह की स्त्री-मुक्ति संघर्ष से संदर्भित पुस्तक है। प्रस्तुत पुस्तक में स्त्री-प्रश्नों से सम्बंधित संदर्भों का निरपेक्ष लेखा-जोखा भर नहीं है बल्कि "स्त्री पराधीनता" के सामाजिक-सांस्कृतिक उत्पाद की चकित कर देने वाली वैश्विक एकता का जिम्मेदारी से भरा विश्लेषण भी है। स्त्रीवाद के उभार की स्थितियों हस्तक्षेपों आंदोलनों के साथ स्त्री की आज़ादी या कि गुलामी के बहुविध रूपों का विश्लेषण इस किताब की खासियत है।

एक तरफ जहाँ पूरी दुनिया महिलाओं के आदर और गरिमा के लिए लड़ रहे हैं,समाज के विभिन्न वर्गों तथा अंगों में महिलाओं के अधिकारों की माँग की जा रही है वही दूसरी तरफ मणिपुर के महिला आंदोलन का इतिहास देश भर में महिला सशक्तिकरण का सबसे बड़ा उदाहरण है। साहित्य पुनरावलोकन के लिए मैंने अपनी शोध संबन्धित पुस्तकों को ही प्राथमिकता दी है। साहित्य पुनरावलोकन के दौरान संबन्धित पुस्तकों से निष्कर्ष रूप में मुख्य जो बाते उभर कर आई वो यही है कि हमारे मानव समाज के इतिहास में हमेशा नारी-इतिहास को उपेक्षित किया गया है जिसे इतिहासकारों ने अपने लेखन में जगह नहीं दी। इतिहास के पन्नों से नारियों का जिक्र अदृश्य ही रहा है। समाज में नारीवादी आंदोलन उभरने के साथ-साथ उपेक्षित इतिहास फिर से लिखा जाने लगा। री-राइटिंग हिस्ट्री के तहत बहुत स्त्री महिलाओं ने अदृश्य औरतों को इतिहास के पन्नों पर लाने का काम किया।

पूँजी के भूमंडलीकरण के चलते आज की दुनिया में असमानता तेज़ी से बढ़ रही है और राज्य की कल्याणकारी भूमिका बहुत कम हो गयी है। इसके कारण गरीबी, बेरोजगारी, शोषण, उत्पीड़न और हिंसा की समस्याएँ बेहद बढ़ गयी है। इनकी सबसे ज़्यादा मार स्त्रियों पर पड़ रही है लेकिन क्या आज का स्त्री आंदोलन इसका कोई प्रतीकार कर पा रहा है? प्रस्तुत तमाम पुस्तकों मे इसी सवाल का जवाब तलाशने की कोशिश की गयी है।

हमारे यहाँ स्त्री मुक्ति का आन्दोलन आज़ादी के साथ ही शुरू हुआ, लेकिन जब प्राथमिकता का सवाल उठा तो गांधी-नेहरू जैसे नेताओं ने भी कहा कि आज़ादी की लड़ाई 'पहली लड़ाई' है। इसके बाद एक 'दूसरी लड़ाई'लड़नी होगी जो स्त्री-पुरुष की समानता की तथा स्त्रियों के अधिकारों की लड़ाई होगी लेकिन पहली लड़ाई में भी स्त्री मुक्ति के आंदोलन से मदद मिल रही थी इसलिए उसे प्राथमिक न

मानते हुए भी साथ-साथ चलाते रहने का प्रयास किया गया लेकिन आज़ादी के बाद उस 'दूसरी लड़ाई' को भुला दिया गया और किसी बड़े आंदोलन के अभाव में स्वयं स्त्रियों को ही अपनी मुक्ति का आंदोलन शुरू करना पड़ा।

साहित्य पुनरावलोकन के माध्यम से मैं अपनी शोध कार्य में मणिपुर की महिला आंदोलन का इतिहास के साथ-साथ भारत के विभिन्न महिला आंदोलनों और मणिपुर के महिला आंदोलनों के तुलनात्मक स्वरूपों को दिखाने का प्रयास किया है। जहाँ मणिपुर में महिला आंदोलनों को एक खास दर्जा मिला है वही दर्जा भारत के विभिन्न भागों में महिलाओं को क्यों नहीं मिल पायी है। मणिपुर की महिला आंदोलन को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने तथा गंभीर सैद्धांतिक सवालों के साथ-साथ महिला आंदोलन से संबन्धित सर्जनात्मक तथा वैचारिक साहित्य को सामने लाने का प्रयास किया और अपने अध्ययन के दौरान इस सकारात्मक सोच पर ध्यान दिया कि इस महिला आंदोलन के इतिहास के पीछे किस विचारधारा का प्रबल योगदान है ताकि भारत के अन्य क्षेत्रों में भी इस तरह का बदलाव लाया जा सके।